सूक्तिमौक्तिकम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» समय पर कर्म का फल

प्रश्न 1 (आसान). यथासमय कर्म का फल कैसा होता है?
उत्तर – लाभकारी (फलदायी)।

प्रश्न 2 (आसान). कथा में आदमी ने क्या नुकसान उठाया?
उत्तर – दूध की एक बूँद भी नहीं मिली और प्रहार से वह आहत होकर गिर पड़ा।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर रोज़ पढ़ाई को बार-बार टालो, तो समय पर कर्म वाले सिद्धान्त के हिसाब से नतीजा क्या हो सकता है?
उत्तर – समझ कमजोर हो सकती है, मेहनत के बावजूद फल घट सकता है (हानि की संभावना)।

प्रश्न 4 (कठिन). एक ही काम दो तरीकों से किया जाए: (1) समय पर, (2) देर से। नैतिक समझ के अनुसार दोनों में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – समय पर किया कर्म फलदायी होता है; देर से किया कर्म का परिणाम बदलकर नुकसान/कम लाभ की ओर जा सकता है, क्योंकि देरी में अवसर, ध्यान और स्थिति बिगड़ जाती है।

» हानिरहित उपाय का कर्तव्य

प्रश्न 5 (आसान). 'हानिरहित उपाय का कर्तव्य' का मतलब क्या है?
उत्तर – उपाय सोचते समय यह भी देखना कि उससे हानि तो नहीं होगी।

प्रश्न 6 (आसान). सिर्फ लाभ देखकर निर्णय लेना ठीक है या नहीं?
उत्तर – ठीक नहीं; उपाय के साथ अपाय/हानि भी सोचनी चाहिए।

प्रश्न 7 (मध्यम). एक उपाय 'काम जल्दी हो जाएगा' ऐसा लगे, फिर भी आप हानि कैसे पहचानेंगे?
उत्तर – उपाय से होने वाली संभावित गलत असर/सुरक्षा/नुकसान को पहले से सोचकर–'क्या इसमें कोई नुकसान छिपा है?'–यह जांच करेंगे।

प्रश्न 8 (कठिन). किस परिस्थिति में अपाययुक्त उपाय ज्यादा खतरनाक हो जाता है? एक उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – जब उपाय दूसरों (खासकर बच्चों) को भी साथ प्रभावित करे या सुरक्षा जोखिम बढ़ाए। उदाहरण: किसी ने तेज तरकीब से फोड़ा/खतरनाक काम कराया और साथी/बच्चे भी उस नुकसान में फंस गए।

» वित्त और वृत्त: यत्न से रक्षा

प्रश्न 9 (आसान). श्लोक में किसे यत्न से संरक्षित करने को कहा गया है?
उत्तर – वृत्त (आचरण/चरित्र) को

प्रश्न 10 (आसान). वृत्त के क्षीण होने पर स्थिति कैसी बन सकती है?
उत्तर – वित्त भी क्षीण/हानिकारक हो सकता है

प्रश्न 11 (मध्यम). क्यों कहा गया है कि वित्त 'वृत्त' के साथ चलता है?
उत्तर – क्योंकि सदाचरण ही भरोसा, स्थिरता और सही रास्ता देता है; वृत्त बिगड़े तो स्थिति हानि की ओर जाती है

प्रश्न 12 (कठिन). तुम्हारे सामने दो उपाय हैं–एक से तुरंत लाभ दिखता है पर गलत आचरण जुड़ा है, दूसरे में लाभ थोड़ा देर से मिलता है पर चरित्र सुरक्षित रहता है। श्लोक के आधार पर कौन सा उपाय चुनोगे और क्यों?
उत्तर – दूसरा उपाय चुनूँगा, क्योंकि श्लोक कहता है–वृत्त को यत्न से बचाओ; वही वित्त को टिकाता है। गलत आचरण वाला रास्ता वृत्त क्षीण करेगा और बाद में हानि बढ़ेगी।

» पर का प्रतिफल व स्वयं का धर्म-ज्ञान

प्रश्न 13 (आसान). अपने लिए जो सही और अच्छा लगता है, उसे हमें दूसरों के लिए क्या करना चाहिए?
उत्तर – वही करना चाहिए–हितकर आचरण दूसरों के लिए भी।

प्रश्न 14 (आसान). जो बात अपने लिए नुकसानदेह है, वह हमें दूसरों के साथ करनी चाहिए या नहीं?
उत्तर – नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर टीचर की बात काटने से तुम्हें बुरा लगता है, तो कक्षा में तुम्हें क्या करना चाहिए?
उत्तर – किसी की बात नहीं काटनी चाहिए–क्योंकि दूसरों के लिए भी वही अहित होगा।

प्रश्न 16 (कठिन). एक दोस्त कहता है, 'हम सबके सामने किसी को मज़ाक मत करो, नहीं तो झगड़ा होगा।' यह सलाह 'आत्मनः प्रतिवूफलानि' से कैसे जुड़ती है?
उत्तर – क्योंकि अगर तुम्हें मज़ाक उड़ाने से बुरा लगता है, तो मज़ाक बनाना पर के लिए भी अहितकारी है; इसलिए ऐसा आचरण न करके दूसरों के लिए भी हितकारी व्यवहार करना चाहिए।

» प्रियवाक्य से संतोष

प्रश्न 17 (आसान). प्रियवाक्य का मतलब क्या है?
उत्तर – ऐसी वाणी जो सुनने वाले को अच्छी लगे, सम्मान दे और शांति दे।

प्रश्न 18 (आसान). प्रियवाणी देने से लोग कैसे होते हैं?
उत्तर – सभी तुष्यन्ति–खुश/संतुष्ट होते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). सही बात भी अगर कठोर शब्दों में कहें तो क्या नुकसान हो सकता है?
उत्तर – सामने वाला दुखी/गुस्से में आ सकता है, संवाद टूट सकता है और संतोष नहीं रहता।

प्रश्न 20 (कठिन). तस्मात् तत् एव वक्तव्यं–इस वाक्य का भाव अपने शब्दों में बताओ और एक उदाहरण दो।
उत्तर – भाव: बोलने में सबसे कीमती/उचित वही कहना है जो अच्छे और प्रिय तरीके से बात को आगे बढ़ाए; जैसे किसी की गलती पर "तुम गलत हो" कहने की जगह "चलो मैं समझाता हूँ, ऐसा करो" कहना।

» परोपकार और सत्संगति की शक्ति

प्रश्न 21 (आसान). नदियाँ, वृक्ष और जल-वाह किस उद्देश्य से काम करते हैं–सुभाषित के भाव के अनुसार?
उत्तर – परोपकार के लिए–सज्जनों की विभूतियाँ परोपकार के लिए होती हैं।

प्रश्न 22 (आसान). सत्संगति/सज्जन-मित्रता को छाया जैसा क्यों कहा गया है?
उत्तर – क्योंकि यह साथ चलती है और धीरे-धीरे स्वभाव पर असर डालती है।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'गुणज्ञेषु गुणाः' का अर्थ क्या है? एक उदाहरण दो।
उत्तर – गुणों को समझने वाले लोगों में रहने से गुण बढ़ते हैं। उदाहरण: जो दोस्त तुम्हारी मेहनत को सही दिशा में मार्गदर्शन देता है।

प्रश्न 24 (कठिन). यदि तुम बुरी संगति में पड़ जाओ, तो 'ते निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति' के भाव से क्या हो सकता है? कारण सहित बताओ।
उत्तर – अगर हम ऐसे लोगों के साथ रहें जो गुण नहीं देखते, तो धीरे-धीरे दोष बढ़ सकते हैं क्योंकि आदतें और विचार वैसी संगति से ढलने लगते हैं।

» गुणार्जन: गुणयुक्त होना और गुणों का विकास

प्रश्न 25 (आसान). 'गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः' का भाव एक पंक्ति में लिखो।
उत्तर – पुरुषों का निरंतर कर्तव्य है कि वे अपने प्रयास गुणों के लिए ही करें।

प्रश्न 26 (आसान). 'गुणयुक्तः दरिद्रोऽपि...' से क्या संदेश मिलता है?
उत्तर – गुणवान व्यक्ति धनहीन होकर भी अगुण ऐश्वर्यवान के बराबर/सम हो जाता है।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'आरम्भगुर्वी... क्रमेण लघ्वी' का मतलब अपने शब्दों में समझाओ।
उत्तर – गुण/आदत की शुरुआत में काम भारी लगता है, लेकिन समय और अभ्यास के साथ वही हल्का और आसान हो जाता है।

प्रश्न 28 (कठिन). कल्पना करो: एक छात्र प्रतिदिन 20 मिनट पढ़ता है, पर पहले हफ्ते में उसे कठिन लगता है। श्लोक के भाव के अनुसार बताओ कि यह स्थिति गुण-विकास के किस सिद्धांत से मेल खाती है और क्यों?
उत्तर – यह 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी' से मेल खाती है, क्योंकि शुरुआत में आदत बनानी पड़ती है इसलिए भारी लगती है; निरंतर प्रयास से वह धीरे-धीरे आसान बनती है–यही गुणों का विकास है।

» सज्जनों की मित्रता जैसी छाया

प्रश्न 29 (आसान). 'छायेव' का संकेत किस बात की तरफ है?
उत्तर – लगातार साथ रहने वाले प्रभाव की तरफ

प्रश्न 30 (आसान). सज्जनों की मित्रता को 'छाया' क्यों कहा गया?
उत्तर – क्योंकि छाया जैसे असर निरंतर साथ रहता है, वैसे संगति स्वभाव को ढालती है

प्रश्न 31 (मध्यम). भावार्थ में आपको कौन-सी 2 बातें ज़रूर लिखनी चाहिए?
उत्तर – सज्जनों की मित्रता = छाया-जैसा निरंतर प्रभाव; संगति से स्वभाव/आदतें धीरे-धीरे बदलती हैं

प्रश्न 32 (कठिन). अगर किसी व्यक्ति की संगति बदल जाए और वह सज्जनों के साथ न रहे, तो यह 'छाया' वाले भाव से कैसे समझ आएगा?
उत्तर – क्योंकि छाया-जैसा निरंतर प्रभाव संगति पर निर्भर है; संगति टूटे तो असर कमजोर पड़ता है और स्वभाव में बदलाव धीमा हो जाता है

» समझ-बूझ: गुणज्ञ में गुण, निर्गुण में दोष

प्रश्न 33 (आसान). 'गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' से क्या मतलब निकलता है?
उत्तर – जिनमें गुण ग्रहण करने की समझ है, उनमें गुण फल देते हैं।

प्रश्न 34 (आसान). 'समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति' का संकेत किस पर है?
उत्तर – वही गुण/जल पात्रता न होने पर पीने योग्य नहीं रहता–लाभ उल्टा हो सकता है।

प्रश्न 35 (मध्यम). किस स्थिति में 'गुण' भी 'दोष' बन सकते हैं?
उत्तर – जब गुण किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुँचे जिसमें उसे समझकर सही रूप से ग्रहण/उपयोग करने की क्षमता न हो।

प्रश्न 36 (कठिन). एक उदाहरण सोचो: अच्छा मित्र तुम्हें नियमित अभ्यास करने को कहता है, पर तुम उसे केवल 'बातें' समझकर टालते हो। इस केस में सूक्ति के अनुसार क्या होगा?
उत्तर – तुम गुणज्ञ की तरह ग्रहण नहीं कर रहे, इसलिए मित्र की सलाह का लाभ नहीं होगा; वह उल्टा तुम्हारे लिए दोष जैसा असर कर सकती है–जैसे अभ्यास की आदत न बनना/आलस बढ़ना।

» अभ्यास-आधारित शाब्दिक व वाक्य-प्रयोग कौशल

प्रश्न 37 (आसान). 'ध्नम्' का शब्दार्थ क्या है?

उत्तर – ध्न, ऐश्वर्य

प्रश्न 38 (आसान). 'वृत्तम्' का शब्दार्थ क्या है?

उत्तर – आचरणम् (आचरण, चरित्र)

प्रश्न 39 (मध्यम). 'सः पाठं पठति' को लोट्लकार में बदलो।

उत्तर – सः पाठं पठतु।

प्रश्न 40 (मध्यम). 'गुणयुक्तः' का अर्थ लिखो।

उत्तर – गुणवान्, गुणसम्पन्नः

प्रश्न 41 (कठिन). वाक्य बनाओ: 'गुणज्ञेषु गुणाः गुणाः भवन्ति' में 'गुणज्ञेषु' का अर्थ बताकर भाव लिखो (संकेत: 'गुणों को जानने वाले')।

उत्तर – 'गुणज्ञेषु' = गुणों को जानने वाले लोगों में। भाव: गुणज्ञ लोगों के बीच गुण ही गुण बनकर प्रकट होते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. गौरव को संस्कृत होमवर्क रोज़ 30 मिनट में करना है। वह पहले 3 दिन 30 मिनट रोज़ करता है, लेकिन चौथे दिन काम टालकर रात में 1 घंटे बाद शुरू करता है और 45 मिनट में पूरा करता है। बताओ–कहानी के सिद्धान्त के अनुसार, समय पर कर्म के फल के संदर्भ में उसके "नतीजे" कैसे बदलेंगे?

› पहले तीन दिन 30 मिनट रोज़ करने का मतलब–यथासमय कर्म

› चौथे दिन टालना मतलब–कर्म में देरी

› देरी से ध्यान/समझ टूटती है, इसलिए समान मेहनत में भी गुणवत्ता घट सकती है

› कहानी का संदेश: यथासमय कार्य फलदायी होता है, देरी से हानि की संभावना बढ़ती है

उत्तर – पहले दिनों का परिणाम अच्छा होगा क्योंकि उसने समय पर कर्म किया। चौथे दिन देरी से कम समझ/कम अभ्यास होने की संभावना है, इसलिए होमवर्क की गुणवत्ता घट सकती है–यानी देर से कर्म का फल लाभ की जगह नुकसान/हानि की ओर जा सकता है।

उदाहरण 2. एक परिवार को रात के समय पानी का काम जल्दी खत्म करना है। एक उपाय सुझाया गया: "रात में ही बच्चों को साथ लेकर नहर की तरफ जल्दी-जल्दी चले चलें, ताकि सुबह समय न लगे।" अब बताइए, हानिरहित उपाय का कर्तव्य के अनुसार इस उपाय पर क्या सोचना चाहिए?

› पहले लाभ सोचो: इससे सुबह का समय बचेगा और काम जल्दी खत्म होगा।

› अब साथ में अपाय/हानि भी सोचो: रात में अंधेरा, पानी के पास खतरा, बच्चों की सुरक्षा–दुर्घटना का जोखिम बढ़ेगा।

› निर्णय नियम लगाओ: बुद्धिमान व्यक्ति उपाय के साथ हानि भी सोचता है–खतरा ज्यादा है तो उपाय सही नहीं माना जाएगा।

› हानिरहित विकल्प चुनो: सुरक्षित समय (सुबह/उचित रोशनी) पर काम करना, बच्चों को सुरक्षित रखना, और उचित सावधानी के साथ व्यवस्था करना।

उत्तर – हानिरहित उपाय वही है जिसमें लाभ तो मिले, पर बच्चों/परिवार को खतरा न हो। इसलिए रात में बच्चों को नहर के पास ले जाना अपाययुक्त है; सुरक्षित समय और सावधानी वाला विकल्प अपनाना चाहिए।

उदाहरण 3. एक छात्र को परीक्षा में नकल का रास्ता दिखता है। वह सोचता है कि इससे अंक बढ़ेंगे और 'धन/सुविधा' (इनाम/प्रशंसा) मिल जाएगी। श्लोक के अनुसार उसे क्या तय करना चाहिए–केवल लाभ या हानि भी देखनी चाहिए? और प्राथमिकता क्या होगी?

› श्लोक की भावना याद करो: वृत्त (आचरण/चरित्र) को यत्न से बचाओ।

› देखो, नकल वाला रास्ता केवल 'फायदा' दिखाता है, पर वृत्त बिगाड़ता है।

› यदि वृत्त क्षीण होगा तो स्थिति हानिकारक बनेगी–यानी पकड़े जाने/विश्वास टूटने/आगे की पढ़ाई खराब होने का खतरा।

› इसलिए प्राथमिकता सदाचार है: जो काम अपने चरित्र को बचाए, वही सही मार्ग।

उत्तर – उसे केवल दिखने वाले लाभ पर नहीं, हानि की संभावना पर भी सोचना चाहिए। श्लोक के अनुसार प्राथमिकता 'वृत्त' (चरित्र) की रक्षा है; नकल जैसे उपाय में वृत्त बिगड़ता है, इसलिए वही रास्ता गलत है।

उदाहरण 4. एक छात्र सोचता है: "मेरे लिए तो कॉपी करके लिखना आसान है, इसलिए मैं परीक्षा में कॉपी कर लूँ।" क्या यह 'आत्मनः प्रतिवूफलानि परेषां न समाचरेत्' के भाव के अनुसार सही आचरण है?

› पहले कसौटी समझो: 'आत्मनः' यानी अपने लिए क्या हितकर/हानिकारक।
› अगर कॉपी से पकड़े गए तो नुकसान, अनुशासनहीनता, भविष्य पर असर–यह अपने लिए हितकर नहीं।
› अब 'परेषां' देखो: अगर तुम कॉपी करोगे तो बाकी मेहनती छात्रों का नुकसान होगा।
› इसलिए 'पर के लिए भी वैसा ही' करने का भाव टूटता है, और अहितकारी आचरण हो जाता है।
› निष्कर्ष: धर्म-ज्ञान के अनुसार ईमानदारी से लिखना और मदद/मार्गदर्शन लेना हितकर है।

उत्तर – नहीं। कॉपी करना न अपने लिए हितकर है न पर के लिए। इसलिए यह 'आत्मनः... परेषां न समाचरेत्' के भाव के खिलाफ है; सही आचरण ईमानदारी है।

उदाहरण 5. कक्षा में एक बच्चे ने बोर्ड से कॉपी करते समय गलती कर दी। तुम उसे क्या बोलोगे ताकि सामने वाला समझे भी और तुष्ट भी रहे? दो वाक्य बनाओ–(1) प्रियवाक्य वाला, (2) गैर-प्रिय/कठोर वाला, और बताओ कि किससे संतोष होगा।

› पहले तय करो–लक्ष्य सिर्फ गलती बताना नहीं, सामने वाले का मन भी शांत रखना है
› प्रियवाक्य वाला वाक्य बनाओ: सम्मान + मदद का भाव + मार्गदर्शन
› गैर-प्रिय वाक्य में दिखाओ: ताना/कटाक्ष/अपमान
› अब निष्कर्ष लिखो: प्रियवाक्य से तुष्टि होती है, कठोर वाणी से असंतोष

उत्तर – प्रियवाक्य: "कोई बात नहीं, चलो मैं दिखाता हूँ–यहाँ ऐसे लिखोगे तो सही हो जाएगा।"
गैर-प्रिय/कठोर: "तुम तो कभी ठीक लिखते ही नहीं हो!"
संतोष होगा प्रियवाक्य वाले वाक्य से, क्योंकि प्रिय/आदर की वाणी से सामने वाला तुष्ट होता है।

उदाहरण 6. मान लो तुम्हारे पास एक किताब है, लेकिन तुम उसे खुद रखकर पढ़ते हो। तुम्हारी टीचर कहती हैं कि 'परोपकार' और 'सत्संगति' दोनों से स्वभाव बदलता है। बताओ–अगर तुम किताब अपने दोस्त को उधार दे दो और साथ में उसे पढ़ने में मदद भी कर दो, तो यह कैसे परोपकार और सत्संगति की शक्ति दिखाता है? (2-3 बिंदु लिखो।)

› बताओ कि किताब/ज्ञान 'देना' परोपकार है क्योंकि तुम अपने फायदे से ज्यादा दूसरों के काम को देखते हो।
› फिर दिखाओ कि तुम दोस्त के साथ बैठकर समझाओगे तो तुम्हारी 'संगति' अच्छी हो जाएगी–वो भी बेहतर सीखने लगेगा।
› अंत में लिखो कि इससे तुम्हारे अंदर भी जिम्मेदारी और अच्छे गुण मजबूत होंगे, क्योंकि अच्छे काम दोहराते हैं।

उत्तर – किताब उधार देना और पढ़ने में मदद करना परोपकार है क्योंकि तुम्हारी शक्ति दूसरों के हित के लिए लगती है। और साथ में बैठकर समझाना सत्संगति की शक्ति दिखाता है क्योंकि अच्छी संगति से दोस्त का स्वभाव/सीखने का तरीका सुधरता है। इस अच्छे काम से तुम्हारे गुण भी टिकते और बढ़ते हैं।

उदाहरण 7. श्लोक के भाव के अनुसार समझाओ कि 'गुणार्जन' में सिर्फ गुणों की कमी दूर करना पर्याप्त क्यों नहीं है, और गुणों का विकास कैसे होता है? एक तर्क में "प्रयत्न", "आरम्भगुर्वी... क्रमेण लघ्वी" और "छायेव मैत्री" को जोड़कर उत्तर दो।

› पहले बताओ कि "गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः" से स्पष्ट है–प्रयत्न गुणों की तरफ होना चाहिए।
› फिर समझाओ कि केवल कमी न होना लक्ष्य नहीं; गुण को अंदर बढ़ाना लक्ष्य है।
› "आरम्भगुर्वी... क्रमेण लघ्वी" से दिखाओ कि शुरुआत भारी लगती है, पर अभ्यास से वही आसान हो जाता है।
› "छायेव मैत्री..." से जोड़ो कि संगति/मित्रता गुणों को बढ़ाती है जैसे छाया साथ चलती है।
› अंत में निष्कर्ष लिखो–निरंतर प्रयास + सही संगति से गुण पक्के होते हैं।

उत्तर – गुणार्जन में सिर्फ दोषों/कमी से बचना पर्याप्त नहीं, क्योंकि "गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः" कहता है कि प्रयत्न हमेशा गुणों की तरफ होना चाहिए। साथ ही "आरम्भगुर्वी... क्रमेण लघ्वी" बताता है कि गुण-निर्माण की शुरुआत भारी लग सकती है, पर निरंतर अभ्यास से वही स्वभाव धीरे-धीरे हल्का और मजबूत बनता है। और "छायेव मैत्री" दिखाता है कि सही संगति का असर 'छाया' की तरह धीरे-धीरे स्वभाव पर पड़ता है, इसलिए गुणों का विकास निरंतर प्रयास और अच्छे मित्र/सज्जनों की संगति से होता है।

उदाहरण 8. भावार्थ लिखिए: "छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।" वाक्य के अनुसार सज्जनों की मित्रता स्वभाव पर कैसे प्रभाव डालती है?

› पहले अर्थ पकड़ो: 'मित्रता' = दोस्ती/संगति, 'छायेव' = छाया जैसी।

› छाया वाली समानता समझो: छाया धूप-छाँव के बीच साथ रहती है, अलग होकर प्रभाव नहीं छोड़ती।

› इसी तरह अच्छे मित्र निरंतर साथ रहकर सोच-व्यवहार पर असर डालते हैं।

› गुणों की बात जोड़ो: अच्छे गुण (सत्य, अनुशासन, परिश्रम) संगति से भीतर बैठते हैं।

› अंत में 1-2 पंक्तियों में निष्कर्ष लिखो: इसलिए सही संगति स्वभाव को धीरे-धीरे स्थायी रूप से बदलती है।

उत्तर – "छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्" का भावार्थ है कि सज्जनों की मित्रता छाया की तरह होती है–जैसे छाया हर कदम के साथ साथ चलती है, वैसे ही अच्छे लोगों की संगति निरंतर हमारे स्वभाव पर प्रभाव डालती है। उनके अच्छे गुण धीरे-धीरे हमारे विचारों और आदतों में उतरने लगते हैं, इसलिए सही संग से हमारा चरित्र स्थायी रूप से सुधरता है।

उदाहरण 9. मान लो कक्षा में एक बच्चा बहुत मेहनती मित्र के साथ बैठता है। शिक्षक कहते हैं: "रोज़ नियमित पढ़ो।" अब उसी बच्चे के मन में अनुशासन की आदत नहीं है। वह मित्र की बात सुनकर भी पढ़ना नहीं शुरू करता, उल्टा समय खराब करता है। बताओ–इस स्थिति में "गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति" और "निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति" के अनुसार परिणाम कैसा होगा?

› गुण पहचानने/ग्रहण करने की 'समझ' देखो: बच्चा नियम को अपनाने की पात्रता नहीं रखता

› गुण (नियमित पढ़ना) फिर भी सामने आता है, पर उपयोग सही नहीं होता

› इसलिए गुण उसी बच्चे में दोष जैसा प्रभाव दे सकते हैं–जैसे वह सलाह सुनकर भी बिगड़ जाए/आलस बढ़ा दे

› निष्कर्ष: बिना ग्रहण-क्षमता लाभ नहीं, उल्टा असर उल्टा हो सकता है

उत्तर – यहाँ बच्चा 'गुणज्ञ' नहीं, इसलिए गुण (शिक्षक की सलाह) का सही ग्रहण नहीं होगा। परिणाम यह कि वह सलाह दोष जैसी बन सकती है–यानी समय बिगड़ना/आलस बढ़ना–और लाभ नहीं मिलेगा।

उदाहरण 10. निम्न वाक्य को लोट्लकार में परिवर्तित करो: 'नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति।'

› पहले अर्थ समझो: 'नद्यः' = नदियाँ; 'आस्वाद्यतोयाः' = स्वादयुक्त जल वाली; 'सन्ति' = हैं।

› लोट्लकार में वाक्य को आदेश/प्रार्थना वाले भाव में बदलना है।

› यहाँ 'सन्ति' वाले भाव को 'भवन्तु' जैसे लोट्लकार रूप में बदलते हैं ताकि 'नदियाँ स्वादयुक्त जल वाली हों' जैसा भाव आए।

› अतः संरचना बनेगी: 'नद्यः + आस्वाद्यतोयाः + भवन्तु'।

उत्तर – नद्यः आस्वाद्यतोयाः भवन्तु।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- कथा के संदेश को एक लाइन में लिखो: यथासमय कार्य ही फलदायी।
- NCERT/board में अक्सर 'उपायं चिन्तयेत्... तथापायं...' से हानरिहति उपाय का आशय पूछा जाता है–दोनों भाग लखिना।
- श्लोक 1 का अर्थ लिखते समय 'वृत्त यत्न से' और 'वृत्त क्षीण वित्त क्षीण' जरूर लिखो।
- श्लोक 2 का भाव लिखो: अपने हित को पर के हित में बदलो, अहितकारी व्यवहार निषिद्ध।
- श्लोक का भाव लिखो: प्रियवाणी = तुष्टि; कठोर वाणी = दरिद्रता।
- बोर्ड में 1 श्लोक का भाव और 1-1 उदाहरण लिखो।
- श्लोकों के भाव लिखो: 'गुणों के लिए प्रयत्न' और 'आरम्भगुर्वी... लघ्वी'–दो लाइन में।
- भावार्थ में 'छाया' की निरंतरता और स्वभाव-परिवर्तन जरूर लिखो।
- बोर्ड में सूक्ति का अर्थ लिखते समय 'योग्य ग्रहणकर्ता' जरूर लिखो।
- लोट्लकार और विशेषण-विशेष्य का सही मिलान लिखना–MCQ/लिखित उत्तर में नंबर दिलाता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› यथासमय कर्म = फलदायी; देर = हानि
› लाभ + हानि दोनों सोचो, तभी सही उपाय
› वृत्त पहले, वित्त साथ; वृत्त बिगड़ा तो हानि
› - अपने लिए हित = पर के लिए हित; अहित मत करो।
› - "प्रिय" बोलो, सामने वाला "तुष्ट" होगा।
› - छाया जैसी सत्संगति, गुण बढ़ाती है।
› प्रयत्न + सही संगति + अभ्यास: शुरुआत भारी, बाद में हल्की।
› - छाया-जैसा निरंतर प्रभाव: सज्जनों की मित्रता गुण ढालती है।
› गुणज्ञ: गुण फलते; निर्गुण: गुण दोष बनते।
› शब्दार्थ लोट्लकार-रूप विशेषण-विशेष्य-जोड़